तकनीकी शिक्षा में वास्तविक सुधार की दरकार: आरके सिंह

उत्तर भारत लाइव ब्यूरो
uttarbharatlive.com

- प्रो. ओंकार सिंह ने तीन संस्थानों का किया निरीक्षण
- संस्थानों के छात्रों से रूबरू हुए कुलपति
- संस्थानों में छात्रों की उपस्थिति में पाई कमी
- कमजोर शिक्षण व्यवस्था में सुधार लाने के निर्देश

देहरादून। प्रदेश में सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थानों में शिक्षा की गुणवश्रा चिंता का विषय बनी हुई है, प्रदेश का युवावर्ग गुणवत्तापूर्ण शिक्षा चाहता है ताकि उसे अच्छा रोजगार मिल सकें। इसको ध्यान में रखते हुए वीर माधों सिंह भण्डारी उत्तराखण्ड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ओंकार सिंह द्वारा आज कल विश्वविद्यालय से सम्बद्ध संस्थानों का औचक निरीक्षण किया जा रहा है। कुलपति नें मंगलवार तीन सस्थानों जिसमें, दून इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड टैक्नोलॉजी, ऋषिकेश, महादेवी इंस्टीट्यूट ऑफ टैक्नोलॉजी, देहरादून व राजकीय होटल मैनेजमेन्ट एण्ड एपलाईड न्यूट्रिशन, देहरादून शामिल है, में पहुच कर संस्थानों में चल रही कक्षाओं, छात्रों की उपस्थिति, संस्थान में छात्रों हेतु आधारभूत सुविधाओं का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान संस्थानों में छात्रों की उपस्थिति में कमी व कमजोर शिक्षण व्यवस्था में जल्द से जल्द सुधार लाने के लिए प्रो. सिंह ने कॉलेज प्रशासन को सख्त हिदायत दी गयी। इस दौरान कुलपति संस्थानों के छात्रों से भी रूबरू हुए और शैक्षणिक प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त की, छात्रों से शिक्षण व्यवस्था में सुधार लाने व अपनी समस्याएं समाधान के लिए संस्थान प्रशासन और विश्वविद्यालय को बतायें जाने के लिए कहा गया और छात्रों को इसका आश्वासन दिया गया कि विश्वविद्यालय स्तर पर छात्रों व शिक्षण व्यवस्था में सुधार लाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान में विश्वविद्यालय द्वारा अपनी गतिविधियों के डिजीटलीकरण तथा समयबद्ध व पारदर्शी निष्पादन हेतु यूनिवर्सिटी मैनेजमेन्ट सिस्टम लागू करना प्रारम्भ कर दिया है, जिससे आगामी कुछ माहों में प्रभावी शैक्षणिक नियंत्रण के साथ-साथ छात्रों की विभिन्न समस्याओं का जल्द से जल्द समाधान विश्वविद्यालय स्तर पर ऑनलाईन हो सकेगा। सिंह नें बताया कि किसी शैक्षणिक संस्थान की बड़ी इमारतें उत्कृष्टता सुनिश्चित नहीं कर सकती है बल्कि यहां काम करने वाले लोगों की कार्यशैली से ही इसमें बडा सुधार आ सकता है, अकादमिक उत्कृष्टता केवल पूंजी के साथ सुनिश्चित नहीं की जा सकती है। एक बेहतर प्रधानाध्यापक और निदेशक तथा संस्था के शिक्षक मिलकर संस्थान में बदलाव लानें में सक्षम होते है। संस्थाओं को शैक्षणिक गुणवश्रा सुनिश्चित करने तथा न्यूनतम उपस्थिति रखने वाले छात्रों को परीक्षा में सम्मिलित नही किये जाने के निर्देश दिये गये।